विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी , वर्ग-दशम् , विषय-हिन्दी.

दिनांक- २४/५/२०

||अध्ययन-सामग्री ||

आज का चिंतन

समस्या का सामना ही समाधान है

इस विचार के समर्थन में मैं आपको एक कहानी सुनाने जा रही हूं ,जो विवेकानंद के जीवन से संबंधित है ।

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानंद जी मां दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया और उनके हाथ से प्रसाद छीनने लगे तथा वे नजदीक आकर डराने भी लगे || स्वामी

जी बहुत भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए दौड़ कर भागने लगे । वह बंदर तो मानो पीछे ही पड़ गए वह भी उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगे ।

पास खड़े एक सन्यासी यह सब देख रहे थे । उन्होंने स्वामी जी को रोका और कहा_ “रुको !डरो मत ,उनका सामना करो “। वृद्ध संन्यासी की यह बात सुनकर स्वामी जी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढ़ने लगे । उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । जब उनके ऐसा करते ही सभी बंदर तुरंत भाग गए तो उन्होंने वृद्ध संन्यासी को इस सलाह के लिए बहुत ही धन्यवाद दिया ।
इस घटना से स्वामी जी को एक गंभीर सीख मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक

संबोधन में इसका जिक्र भी किया और कहा- "यदि तुम किसी समस्या से भयभीत हो, तो उससे भागो मत , पलटो और सामना करो " वाकई यदि हम भी अपने जीवन में आए समस्याओं का सामना करें और उससे भागें नहीं तो बहुत ही समस्याओं का समाधान हो जाएगा !

हालिया परिस्थिति में विवेकानंद का यह विचार बेहद ही संबल देने वाला साबित होगा । बिल्कुल हमें कोविड-19 से डरकर अपने जीवन को कैद नहीं कर लेना है, बल्कि भयानक परिस्थिति में इस विषाणु का सामना पूरी सतर्कता के साथ करना है और स्वयं को, अपने परिवार को तथा अपने देश को इस संक्रमण से बचाना है ।

एहतियात ही बचाव है!

वार्तालाप: कल की कहानी को आज भी हम जारी रखेंगे....

पठन-पाठन

. थोड़ी देर बाद फिर लड़कों की मंडली जुट जाती थी । इकट्ठा होते ही राय जमती कि खेती की जाए । बस, चबूतरे के छोर पर घिरनी गड़ जाती और उसके नीचे की गली कुआँ बन जाती थी । मूंज की बटी हुई पतली रस्सी में एक चुक्कड़ बांधकर गराड़ी पर चढ़ाकर लटका दिया जाता था और दो लड़के बैल बनकर मोट खींचने लग जाते । चबूतरा खेत बनता, कंकड़ बीज और ठेंगा हल-जुआठा । बड़ी मेहनत से खेत जोते -बोए और पटाए जाते। फसल तैयार होते देर ना लगती और हम हाथों-हाथ फसल काट लेते थे । काटते समय गाते थे

ऊँच नीच में बई क्यारी ,जो उपजी सो भई हमारी ।

फसल को एक जगह रखकर उसे पैरों से रौंद डालते थे । कसोरे का सूप बनाकर आसाते और मिट्टी के दीए के तराजू पर तौल कर राशि तैयार कर देते थे । इसी बीच बाबू जी आ कर पूछ बैठते थे इस साल की खेती कैसी रही भोलानाथ ?

बस, फिर क्या, हम लोग ज्यों का त्यों खेत खलिहान छोड़कर हंसते हुए भाग जाते थे । कैसी मौज की खेती थी ।

ऐसे- ऐसे नाटक हम लोग बराबर खेला करते थे बटोही भी कुछ देर ठिठककर कर हम लोग के तमाशे देख लेते थे ।

जब कभी हम लोग ददरी के मेले में जाने वाले आदमियों का झुंड देख पाते तब कूद कूद – कूद कर चिल्लाने लगते थे ___
चलो भाइयों ददरी ,सत्तु पिसान की मोटरी

अगर किसी दूल्हे के आगे- आगे जाती हुई ओहारदार पालकी देख पाते तब खूब जोर-जोर से चिल्लाने लगते थे-

रहरी में रहरी पुरान रहरी ,डोला के कनिया हमारे मेहरी ।

इसी पर एक बार बूढ़े वर ने हम लोगों को बड़ी दूर तक खदेड़ कर ढेरों से मारा था ।
उस खबीस की सूरत आज तक हमें याद है । ना जाने किस ससुर ने वैसा जमाई ढूंढ निकाला था ।

वैसा घोड़मुँहा आदमी हमने कभी नहीं देखा / शेष कल ....

गृहकार्य :

- ***दी गई अध्ययन सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कॉपी में लिख कर एकत्रित करें ताकि पूरी कहानी आपको समझ में आएगी ।***
- ***पाठ में से तद्भव तथा देशज शब्दों को चुनकर लिखें ।***

फिर कल भेंट होगी 💐💐